- ये सरकार के भ्रष्ट आचरणों को प्रकट करते हैं और सुशासन की मांग करते हैं। उदाहरण के लिए, वर्ष 2011 के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के तहत इंडिया अगेंस्ट करप्शन के प्रयासों ने लोकपाल और लोकायुक्त के गठन का मार्ग प्रशस्त किया।
- ये नागरिकों को **शिकायतों के निवारण हेतु वैकल्पिक मंच प्रदान करते हैं** तथा सरकार को उत्तरदायी बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, मजदूर किसान शक्ति संगठन ने सरकार की जवाबदेही की मांग करते हुए जन आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसने अंततः सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 पारित करने का मार्ग प्रशस्त किया।
- दबाव समूहों ने **पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु** लगातार आंदोलनों का नेतृत्व किया है। इनमें चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओं आंदोलन और अप्पिको आंदोलन सम्मिलित हैं।
- दबाव समूहों की प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करती हैं कि **किसी विशेष समूह या हित का प्रभुत्व नहीं रहे**। उदाहरण के लिए, भारत में कई व्यवसाय संघ (श्रम संगठन) हैं जो अपने सदस्यों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे भारतीय मजदूर संघ,अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस आदि।

इसलिए, दबाव समूहों को लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक अपरिहार्य तत्व माना जाता है, विशेष रूप से भारत जैसे अत्यधिक विविधतापूर्ण समाज में, जहां व्यक्ति अपने हितों को अपने दम पर आगे नहीं बढ़ा सकते हैं और उसे **अत्यधिक सौदेबाजी की शक्ति प्राप्त करने हेतु समान परिस्थितियों में रह रहे अन्य लोगों के समर्थन की आवश्यकता होती है।** किसी राजव्यवस्था में दबाव समूहों की उपस्थिति इसकी राजनीतिक परिपक्वता और समावेशी प्रकृति को दर्शाती है, जहां प्रत्येक व्यक्ति को सरकार की नीतियों को प्रभावित करने का अधिकार होता है।

3. Why is skill development an important area of policy focus in India? What steps has the government taken in recent years in this regard?

भारत में कौशल विकास नीतिगत संकेन्द्रण का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र क्यों है? सरकार ने हाल के वर्षों में इस संदर्भ में क्या कदम उठाए हैं?

दृष्टिकोण:

- भारत में कार्यबल की स्थिति को संक्षिप्त रूप में रेखांकित कीजिए।
- चर्चा कीजिए कि भारत में कौशल विकास नीतिगत संकेंद्रण का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र क्यों है।
- इस संबंध में सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता और विकास में सुधार के लिए उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में 29 वर्ष की औसत आयु के साथ सबसे युवा कार्यबल में से एक होने की भारत की जनसांख्यकीय लाभांश की संभावनाओं को साकार करने हेतु कौशल विकास एक महत्वपूर्ण रणनीति है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2027 तक, भारत के पास विश्व का सबसे बड़ा कार्यबल होने का अनुमान है। इस संदर्भ में, भारत को **कौशल विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि**:

- भारत में 70 प्रतिशत श्रम बल ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और निम्न उत्पादक कृषि गतिविधियों पर निर्भर है जहाँ **विशाल अल्प-बेरोजगारी** है जो **उत्पादकता के निम्न स्तर को बढ़ावा देती है।**
- **अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण तक पहुंच का अभाव** सुभेद्य एवं हाशिए पर रहने वाले वर्गों को निम्न कौशल; निम्न उत्पादकता वाले रोजगार और निर्धनता के दुष्चक्र में उलझाए रखता है। नवीनतम ICE360° सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में औपचारिक रूप से कुशल श्रमिकों का अनुपात कुल कार्यबल का 4.69% है जो चीन (24%), जर्मनी (80%) आदि जैसे अन्य देशों की तुलना में अत्यंत कम है।
- **निम्न कौशल स्तरों के कारण उद्यमों की** लगभग 95 प्रतिशत इकाइयाँ 5 से भी कम श्रमिकों की संलग्नता के साथ सूक्ष्म आकार की हैं। यह उद्यमों की मध्यम और वृहद् उद्यम के रूप में वृद्धि को बाधित करता है, इसके परिणामस्वरूप उत्पादकता निम्नस्तरीय और दक्षता में हानि होती है।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा एनालिटिक्स जैसी नई तकनीकों के उद्भव के साथ ज्ञान आधारित वैश्विक अर्थव्यवस्था में भागीदारी हेतु लोगों को कौशल (स्किलिंग), पुनःकौशल (रीस्किलिंग) और कौशल वृद्धि (अपस्किलिंग) प्रदान करने की